रिकॉर्ड :– यही बहार है..... "ऊँ" पिताश्री 24/8/1965
ओम् शान्ति। यह बच्चे कहाँ आए हुए हैं? ज्ञान सागर के कंठे पर। (वै)से (र)हते हैं ज्ञान गंगाओं के कंठे पर और अभी आए हो ज्ञान सागर के कंठे पर। कौन आए हैं? ज्ञान गंगाएँ। (क्या) बनने लिए? कौड़ी से हीरा अर्थात् कंगाल से सिरताज बनने लिए। ब्रह्मा, ब्रह्मपुत्रा और शिव है ज्ञान (सा)गर। यह है ब्रह्मपुत्रा नदी। ब्रह्मा बच्चा तो है ना। ब्रह्मा वल्द शिव। तुम हो पौत्रे और पौत्रियाँ। कलकत्ता .... सागर और नदियों का बड़ा भारी मेला लगता है। वहाँ गंगा, ब्रह्मपुत्रा और सागर मिलते हैं। ब्रह्मपुत्रा ... और भी नदियाँ मिलती हैं। मुख्य है ब्रह्मपुत्रा और सागर का संगम। इनको ही कहते हैं डाइमं(ड) .....। यह नाम अग्रेज़ों ने रखा है। अर्थ कुछ भी नहीं समझते। ऐसे ही नाम रख दिया है। बाप अर्थ समझाते हैं। तुम इस समय आए हो ब्रह्मपुत्रा और ज्ञान सागर पास सन्मुख। वहाँ भी (सा)गर के सन्मुख जाते हैं हीरा बनने लिए; परन्तु हीरे के बदली पत्थर बन जाते हैं; क्योंकि (वो) तो है भक्तिमार्ग। वो संगम झूठा कहेंगे अथवा उनको मैटीरियल संगम कहा जाता है। (य)ह संगम है आत्माओं और परमात्मा का। दोनों इकट्ठे हैं। वो जड़ और यह चेतन। यह कहाँ भी जा सकते ...। यह जैसे कि हीरे जैसा बनने का संगम हो गया। कहेंगे, हीरे जैसा बनो। यह है ब्रह्मपुत्रा और एडॉप्टेड ज्ञान गंगाएँ। वो नदियाँ तो अनगिनत हैं। सबको मालूम है भारत में इतनी नदियाँ होती हैं। यह तो अनगिनत हैं। इन ज्ञान गंगाओं का अंत नहीं पाया जा सकता। (सा)गर से नदियाँ इस समय ही निकलती हैं। पहले तो ब्रह्मपुत्रा निकलती हैं, फिर इन द्वारा छोटी–मोटी नदियाँ निकलती हैं। तुम जानते हो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। कोई बड़ी है, कोई छोटी है। यह सब मनुष्यों को हीरे जैसा बनाते हैं। ऐसे भी नहीं कहेंगे कि सिर्फ सूर्यवंशी महाराजा–महारानी हीरे जैसा बनते हैं। नहीं। यथा राजा–रानी तथा प्रजा। तुम सबका जीवन ..... जैसा बनता है। जो स्वर्ग के लिए थोड़ा भी पुरुषार्थ करते हैं वो हीरे जैसा बनते हैं। यह (ब्रह्म)पुत्रा बड़ी नदी और सागर इकट्ठे रहते हैं। तुम बच्चे जब आते हो तो अंदर में यह जानते .... कि हम जाते हैं बापदादा पास। बाप ज्ञान का सागर है। फिर प्रवेश करते हैं ..... ब्रह्मपुत्रा अर्थात् ब्रह्मा में। इन द्वारा हमको हीरे जैसा बनाते हैं। अब जो जितना (पुरु)षार्थ कर श्रीमत पर चले। यह भी जानते हो, जहाँ तक जीना है, पुरुषार्थ करना है। शिक्षा (मि)लती रहती है। इम्तिहान की रिज़ल्ट तो विनाश के समय निकलती है। एक तरफ रिज़ल्ट निकलेगी, दूसरे तरफ विनाश शुरू होगा। फिर तो हाहाकार हो जाता है, बात मत पूछो। इसलिए विनाश होने से पहले तैयार होना है। जानते हो, ज्ञान सागर और ब्रह्मपुत्रा दोनों इकट्ठे ...। ब्रह्मा की लाइफ 100 दिखलाते हैं। समझना चाहिए बाकी कितना समय होगा और यह .... जानते हैं, जब हमारी राजधानी स्थापन होनी होती है तो यह सारी सफाई भी होनी है। तुम (पा)वन बनते रहते हो। वो हैं पतित। जब सभी पतित खलास हो जाएँ, हिसाब–किताब चुक्तू कर (वा)पिस चले जाएँ, एक भी पतित ना रहें तब कहेंगे पावन दुनिया। तुम इस समय हो पावन; परन्तु सारी दुनिया तो पावन नहीं है ना। पावन बननी है। जब विनाश होगा तब पावन बनेगी। उनको नई दुनिया कहेंगे। नई दुनिया का संवत कोई पूछे तो समझाना चाहिए जब महाराजा–महारानी तख्त पर बैठते हैं। जब तक नया संवत शुरू हो तब तक पुराना (ज़)रूर कायम रहेगा। यहाँ से संवत शुरू नहीं होगा। हम ब्राह्मण भल नए हैं; परन्तु दुनिया (अ)थवा सारी पृथ्वी थोड़े ही नई है। अभी है संगम। कलियुग पूरा हो सतयुग आना है। हम .....ते ही हैं फर्स्ट प्रिन्स–प्रिंसेज, राधे–कृष्ण। फिर भी हम उस समय सतयुग नहीं कहें ..... जब तक ल०ना० तख्त पर बैठे ना हैं। उस समय कुछ ना कुछ खिटपिट चलती है। भल ..... कृष्ण आ जाते हैं। देखो यह है विचार–सागर–मंथन करने की बातें। सतयुग तब शुरू ..... होगा। सूर्यवंशी डिनायस्टी का संवत फलाना। प्रिंस–प्रिंसेज़ के नाम

पर कब संवत नहीं होता है। बाकी बीच के समय में आना–जाना होता रहता है। छी–2 ..... को भी जाना है। कुछ ना कुछ तो बचे हुए रहते हैं ना। जो बचे हुए हैं वो भी वापिस आ जा..... टाइम लगता है। यह कौन समझाते हैं? ज्ञान सागर भी समझाते हैं। ब्रह्मपुत्रा ज्ञान नदी भी है। दोनों इकट्ठे समझाते हैं। वो कुंभ का मेला तो वर्ष–2 लगता है। यह कुंभ का मेला सागर और नदियों का मेला जैसा–तैसा 40–50 वर्ष चलता ही है। तो तुम बच्चे कहेंगे हम जाते हैं मात–पिता वा ज्ञान सागर और बड़ी नदी पास। बाबा, हमको इस बड़ी नदी और इन नदियों द्वारा वर्सा दे रहे हैं अर्थात् हीरे जैसा बनाते हैं। कुंभ के मेले में कितना खुशी से, बड़े सिदक से जाते हैं और वहाँ मंसा–वाचा–कर्मणा पवित्र रहते हैं। वो है जड़ यात्रा। यात्रू अपना कल्याण करने चाहते हैं। पण्डों का इतना कल्याण नहीं होता है जितना यात्रुओं का। पण्डे लोग तो पैसा इकट्ठा करने जाते हैं। उन्हों के पास इतना सिदक नहीं रहता है। यात्रुओं को रहता है। वो तो पैसा इकट्ठा कर खाते रहते हैं। वो है झूठे पण्डे। यात्रुओं की बुद्धि में रहता है हम दर्शन करें। बहुत अच्छी भावना से जाते हैं। तो कइयों को सा० भी हो जाता है। जानते हैं लिंग बर्फ का बना रहता है। सामने जाने से बर्फ ही बर्फ जैसे देखने में आती है। भावना वाले तो खुश हो जावेंगे यह तो कुदरत है, बर्फ में भी भगवान। ज़रूर भगवान है तब तो बर्फ में भी लिंग बन जाता है। मनुष्यों की ऐसी भावना बैठ जाती है। है कुछ भी नहीं। हर बात में झूठ। गाते भी हैं झूठी माया... यात्राएँ आदि सब झूठी हैं। सच्ची यात्रा तो अभी तुम्हारी हो रही है। मनुष्य समझते हैं बहुत धक्का खाया है कहाँ भगवान से मिले; परन्तु भगवान मिलता है नहीं। बाबा ने समझाया है भगवान का चित्र ही नहीं निकाल सक....। बिन्दी का फोटो थोड़े ही होता है। वो तो समझाने में कहा जाता है, स्टार है। भृकुटि के (बीच) में चमकता है अजब सितारा। कई बच्चियाँ मस्तक पर छोटा स्टार लगाती भी है। यह सुना हुआ है ना कि आत्मा का निवास भृकुटि में है। तो स्टार लगाते हैं। सच्चा तिलक अगर कहें तो वो है। राजाई का तिलक फिर बड़ा होता है। वो स्थूल राजतिलक मिलता है। तुम बच्चों को ज्ञान आ जाता है हम आत्माओं को अब राजतिलक मिलता है। आत्मा समझती है अभी हमको प०पि०प० से राजतिलक मिलता है। भृकुटि के बीच हमेशा स्टार कहते हैं। बहुत अच्छा स्टार लगाते हैं। सोने का भी लगाते हैं। सौभाग्य तो सोने का होता है ना। अभी तुमको सारा ज्ञा(न) मिला हुआ है। हम स्टार अब हीरे जैसा बनते हैं। हम आत्मा स्टार हैं। प०पि०प० भी इतना ही छोटा है; परन्तु उनमें सारी नॉलेज है। यह बड़ी गुह्य बातें हैं। तुमको ज्ञान अर्थात् सोझरा मिला है। प०पि०प० ..... रूप को भी देखा समझा है। जैसे आत्मा का सा० होता है वैसे परमात्मा का भी होता है। कहेंगे, जैसे तुम वैसे मैं हूँ। बाकी बच्चे को बाप का क्या (सा०) चाहिए। आत्मा छोटी–बड़ी नहीं है। जैसे तुम हो वै(से) बाप है। सिर्फ महिमा और पार्ट अलग–2 है और सबसे भिन्न हैं। एक ना मिले दूसरे से। एक्टर्स का पार्ट एक जैसा थोड़े ही हो सकता। इनको ईश्वरीय (कुटुम्ब) कहा जाता है। वास्तव में ड्रामा की कुदरत कह....; क्योंकि बाप ऐसे नहीं कहते मैं ड्रामा बनाया है। फिर प्रश्न उठेगा कि कब बनाया? इनको कहा ही जाता है कुदरत। यह चक्कर कैसे फिरता है सो अभी तुम जान गए हो। आत्मा स्टार है, उनमें कितना बड़ा पार्ट है। प०पि०प० को सर्व शक्तिवान, वर्ल्ड ऑलमाइटी अथॉर्टी, ज्ञान ... सागर कहा जाता है। यहाँ किसको ज्ञान सागर नहीं कहा जाता। वेद–शास्त्र आदि पढ़ने वा(ले) शास्त्रों का ही ज्ञान सुनाते हैं। बाकी बाप में जो ज्ञान है वो तो कोई में भी नहीं है। भग(वान) ही आए सहज राजयोग, ज्ञान सिखलाते हैं। उनको ही ज्ञान सागर कहेंगे। तो यह नदियों ... मेला लगता है। यह भी समझते हो सागर से नदियाँ निकलती हैं। कई बच्चों को यह भी ..... नहीं रहता है। वैसे ही तुम्हारी बातों को भी कोई नहीं जानते हैं। ज्ञान सागर कैसे आता ...

.....गंगाएँ कैसे ज्ञान पाती होगी। यह है ज्ञान की बातें। झूठी बातें मनुष्यों द्वारा बुद्धि में .....हैं। तो सच्ची बातों का कोई को पता नहीं है। तुम उस सागर और इस ज्ञान सागर दोनों ... जानती हो। अभी तो वो सागर और नदियाँ भी दुख देती रहती हैं। सागर भी उथल पड़ते तो कितना नुकसान हो जाता है। अभी ज्ञान सागर पतित–पावन बाप को सभी याद करते हैं। उस सागर वा नदियों को कोई याद नहीं करते हैं। पतित–पावन ज्ञान सागर को याद करते हैं। उस सागर से ही यह नदियाँ निकलती हैं। उनके नाम–रूप, देश–काल को जानती ही नहीं। भल शिव नाम कहते भी हैं, सिर्फ लिंग का नाम रख दिया है। बाबा का नाम तो अविनाशी है ना। शिवबाबा रचयिता है और उनकी रचना भी है। गॉड इज़ वन, रचना भी एक है और दोनों अनादि हैं। कैसे अनादि हैं वो बाप बैठ समझाते हैं। सतयुग में यह त्योहार आदि कुछ भी होते नहीं। सब गायब हो जाते हैं। फिर भक्तिमार्ग में शुरू होते हैं। इस समय जो पार्ट चल रहा है पतित से पावन बनने का, इनके जो त्योहार बनेंगे वो भक्तिमार्ग से शुरू होंगे। मनुष्य समझते हैं कि स्वर्ग था। फिर स्वर्ग आवेगा; परन्तु इस समय कलियुग, नर्क है। इनकी आयु का कोई को पता नहीं है। घोर–अंधियारा यह है। कल्प की आयु का भी किसको पता नहीं है। कहते भी हैं यह ड्रामा है, जो फिरता रहता है; परन्तु आयु का पता ना होने कारण कुछ भी समझते नहीं। इसलिए कहा जाता है घोर अंधियारे में हैं। कलियुग की आयु अब पूरी हुई है। फिर सतयुग की आयु शुरू होगी। बाकी वो विद्वान लोग तो सब शास्त्र ही पढ़ते हैं। शास्त्र हैं भक्तिमार्ग के। यह बाप शास्त्र तो नहीं पढ़ते। यह कहते हैं इन वेदों–शास्त्रों, जपो–तपो आदि से तुमको कब मुक्ति–जीवनमुक्ति नहीं मिल सकती है। ब्रह्मा के मुख द्वारा बाप बैठ सभी वेदों–शास्त्रों का सार समझाते हैं। तो उन्होंने फिर ब्रह्मा को शास्त्र दे दिए हैं। वो भी सभी शास्त्र थोड़े ही हाथ में पकड़ सकते हैं वा ब्रह्मा द्वारा कोई सब शास्त्र थोड़े ही बैठ सुनाते हैं। जानते हैं यह सब भक्तिमार्ग के हैं। यह तो पढ़ते आते हैं ....। कब से पढ़ते आए हैं, जानते कुछ भी नहीं। सिर्फ कह देते अनादि हैं। वेदव्यास ... रचे। वेदों को वो लोग ऊँचा मानते हैं; परन्तु लिखा हुआ है वेद–शास्त्र आदि सब ..... के पत्ते अर्थात् रचना है। तुम बच्चे जानते हो यह शास्त्र आदि सब फिर वो ही .....नेंगे। वो नाम रखेंगे। किसने बनाया, यह भी जानने की कोई दरकार नहीं। जिसने .... बनाए फिर भी वो ही झूठे शास्त्र बनावेंगे। समझते हैं क्राइस्ट का बाईबल बाद में (लिख)वाया होगा। ऐसे नहीं कहेंगे बाईबल शुरू से ही बना। नहीं। यह सब भक्तिमार्ग में बनते .... हैं। क्रिश्चियन धर्म के जब बहुत होवें तब चर्च बने। बहुत भक्त बनें तब तो चर्च में जावें। तुम जब भक्तिमार्ग में जाते हो फिर ढेर मंदिर बनाते हो। अभी तुम जानते हो, हम फिर से पूज्य बन रहे हैं। फिर हम पुजारी बनेंगे तो मंदिर आदि बनावेंगे। राजा–रानी मंदिर (ब)नावेंगे तो प्रजा भी बनावेगी। भक्तिमार्ग शुरू होने से फिर सब मंदिर बनाने लग पड़ते हैं। कोई बनाते हैं, कोई मंदिर में जाते हैं। पैसे तो बहुत रहते हैं। घर–2 में मंदिर बना ... सकते हैं। एक–2 के घर मंदिर हो सकता है। महाराजा ने कोई फैशन निकाला तो झट ..... पूजा शुरू हो जाती। तुम ही पूज्य फिर तुम ही पुजारी बनेंगे। वो भी नम्बरवार बनेंगे। ... तुम जो पूज्य बनते हो वो ही फिर पुजारी बन ल०ना०, राम–सीता आदि के मंदिर बनावेंगे। ल०ना० ..... राजधानी में तो सीता–राम का मंदिर बन नहीं सकता। मंदिर तो बाद में बनते हैं भक्ति(मार्ग) में। जैसे–2 गिरते जाते हैं मंदिर बनाते जाते हैं। सूर्यवंशियों और चंद्रवंशियों की .... प्रोपर्टी है वो वैश्यवंशी, शूद्रवंशी भी भोगते हैं। नहीं तो यह राजाई कहाँ से आई? (प्रोपर्टी) चलती आती है। बड़ी–2 प्रोपर्टी जो है वो फिर छोटी होते–2 फिर आखरीन कुछ भी नहीं रहता

है। आपस में बाँटते ही जाते हैं। यह मुसलमान लोग आदि तो बाद में आते हैं। तो बच्चों को समझ में अब आ गया है– कैसे हम पूज्य बनते हैं, कितना समय बनते हैं, फिर कैसे पुजारी बनते हैं। अभी समझ गए ना प०पि०प० का नाम–रूप, देश–काल और उनका पार्ट। भक्तिमार्ग में भी भक्तों की शुभ भावना बाप ही पूरी करते हैं। अशुद्ध भावना रावण पूरी करते हैं। अभी तुमको ज्ञान सागर ने सारा ज्ञान बुद्धि में बिठाया है। सब तो नहीं सुनेंगे। जो कल्प पहले वाले हैं वो ही निकलते रहेंगे। तुम पण्डे लोग आगे वर्ष आए और फिर अब आए हो तो कुछ नए–2 लाए हो ना। कुछ छोड़ कर भी आए हो। जो अजन लायक ना बने हैं दूसरी बारी फिर और नए–2 को लावेंगी। वृद्धि तो होती रहती है ना। सूर्यवंशी डिनायस्टी, चंद्रवंशी डिनायस्टी सब यहाँ बननी है। जितना जो अच्छी सर्विस करेंगे वो ऊँच पद पावेंगे। एक/दो को आपसमान बनाते वृद्धि को पाना होता है। जितना आपसमान बनावेंगे उतना ऊँच पद पावेंगे। अपनी दिल से पूछना होता है कितने पर रहम कर और उनको मार्ग बताया और वो फिर इस मार्ग पर चल पड़ा। अगर खुद नहीं चल सकते हैं तो औरों के लिए हॉस्पिटल वा यूनिवर्सिटी बनावेंगे। कहेंगे, हम धन से सेवा कर सकते हैं। मंसा–वाचा नहीं कर सकते हैं। इससे भी बहुतों का फायदा होगा। तो इसका अजूरा मिल जावेगा। ऐसे–2 फिर प्रजा में भी आ जावेंगे। हम नहीं कर सकते हैं। फुर्सत नहीं। बाकी हाँ, हम मदद कर सकते हैं। तो अच्छा, खोलो सेन्टर। युक्तियाँ रची जाती हैं। बड़ा मकान आदि भी नहीं बनाओ। किराया पर ले लो। मकान तो फिर भी एक हो जावेगा ना। ऐसे खर्चा नहीं करो। लाख–डेढ़ से ब्राचीज़ निकालो। श्रीमत पर चलो। तो बहुत सेन्टर्स वृद्धि को पाते जावेंगे। घर–2 में हॉस्पिटल होनी चाहिए। बिचारे बहुत बीमार, रोगी हैं। यह किसको पता नहीं है। इस समय सारी दुनिया रोगी है। साधु–संत आदि सब रोगी हैं। तो कितनी हॉस्पिटल होनी चाहिए। मकान बनाते–2 ही अगर मर जाए तो। शुभ कार्य में देरी नहीं करनी चाहिए। शिवबाबा भी किरा(ये) पर मकान (रथ) लेते हैं ना। तुम भी किराया पर लेकर सेन्टर खोलते जाओ। तो बहुतों .... कल्याण होगा। बहुतों की आशीर्वाद तुमको मिलेगी। कितना राज़ समझाते हैं। बाप के ... मददगार बनो। वो भी समझाते रहते हैं। मनुष्यों पास जो इतना धन है, सब व्यर्थ है। बाप को इतनी दरकार नहीं है। बाप तो करन–करावनहार है ना। इनसे भी कराया है ना। सबसे कर... रहते हैं। शिवबाबा कहते हैं मैं राय देता हूँ। मैं आता ही हूँ राय देने। ऐसी राय देता हूँ जो तुम एकदम धनवान बन जाते हो। यह है गॉड फादरली पढ़ाई। सोर्स ऑफ इनकम। 21 जन्मों की बादशाही मिलती है। पढ़ाने वाला है भगवान। उनके साथ योग लगाना है। इनको कहा जा(ता) है ज्ञान का सागर। योगेश्वर। ईश्वर अपने साथ योग सिखलाते हैं और ज्ञान देते हैं। श्री.... को योगेश्वर नहीं कहा जाता। योग सिखलाने वाला ईश्वर। वो ज्ञान का सागर भी है। स.... के आदि–मध्य–अंत का ज्ञान सुनाते हैं। अच्छा।

अच्छा, मम्मा चली गई, यह भी एक तूफान आया। अच्छे–2 झाड़ों को गिराया। संशय बुद्धि हुए, फिर बाबा की मुरली ने अर्थात् ज्ञान संजीवनी बूटी ने बहुतों को खड़ा कर दिया। कोई तो अभी तक भी झुकते रहते हैं। बाप कहते हैं– बच्चे, माम् एकम् याद करो। नंगे अर्थात् अशरीरी बनो। अशरीरी बाप को याद करो। मंज़िल है। फिर भी पक्का बनाने लिए बा(प) पुरुषार्थ कराते रहते हैं। अच्छा, मात–पिता, बाप–दादा का सिकीलधे बच्चों प्रति यादप्यार।

सर्व ब्राह्मण कुल भूषणों, यादप्यार बाद समाचार कि बापदादा को ..... की कुछ तकलीफ है सोई दांत ठीक कराने और तबीयत को चेकअप कराने लिए ..... शायद बॉम्बे वा देहली तरफ चले जाएँगे मास भर के लिए।